

॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

त्रैलोक्यरक्षणार्थयिब्रह्मणास्तृष्टमायुधं ॥ तद्विव्यमजरंचैवफाल्गुनार्थायवैधनुः ॥ १२ ॥ वैष्णवंनकुलायाथसहेदेवायचाश्विजं ॥ घटोत्कचायपौलस्त्यं धनु  
दिव्यंभयानकं ॥ १३ ॥ रौद्रमाग्नेयकौबेर्याम्यगिरिशमेवच ॥ पंचानाद्रौपदेयानांधनूरत्नानिभारत ॥ १४ ॥ रौद्रंधनुर्वरंश्रेष्ठलेभेयद्रोहिणीसुतः ॥ तत्तुष्टःप्रद  
दौरामःसौभद्रायमहात्मने ॥ १५ ॥ एतेचान्येचबहवोध्वजाहेमविभूषिताः ॥ तत्रादृश्यंतशूराणां द्विषतांशोकवर्धनाः ॥ १६ ॥ तदभूत्त्वजसंवाधमकापुरुषसेवि  
तं ॥ द्रोणानीकंमहाराजपटंचित्रमिवापितं ॥ १७ ॥ शुश्रुवुर्नामगोत्राणिवीराणांसंयुगेतदा ॥ द्रोणमाद्रवतारंजनस्वयंवरइवाहवे ॥ १८ ॥ इतिश्रीमहा  
भारतेद्रोणपर्वणिसंशप्तकवधपर्वणिहयध्वजादिकथनेत्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

नादेवानामपिसंजय ॥ आहवेयेन्यवर्ततटकोदरमुखानृपाः ॥ १ ॥ संप्रयुक्तःकिलैवायंदिष्टैर्भवतिपूरुषः ॥ तस्मिन्नेवचसर्वार्थाःप्रदृश्यंतपृथग्विधाः ॥ २ ॥  
दीर्घविप्रोषितःकालमरण्येजटिलोजिनी ॥ अज्ञातश्चैवलोकस्यविजहारयुधिष्ठिरः ॥ ३ ॥ सएवमहर्तिसिनांसमावर्तयदाहवे ॥ किमन्यहैवसंयोगान्ममपुत्र  
स्यचाभवत् ॥ ४ ॥ युक्तएवहिभाग्येनध्रुवमुत्पद्यतेनरः ॥ सतथाकृष्यतेननयथास्वयमिच्छति ॥ ५ ॥ द्यूतव्यसनमासाद्यक्लेशितोहियुधिष्ठिरः ॥ सपुनर्भागधे  
येनसहायानुपलब्धवान् ॥ ६ ॥ अद्यमेकंकयालुब्धाःकाशिकाःकोसलाश्रये ॥ चेदयश्चापरेवंगामामेवसमुपाश्रिताः ॥ ७ ॥ दृथिवीभूयसीतातममपार्थस्य  
नोतथा ॥ इतिमामब्रवीत्सूतमंदोदुर्योधनःपुरा ॥ ८ ॥ तस्यसेनासमूहस्यमध्येद्रोणःसुरक्षितः ॥ निहतःपार्षतेनाजौकिमन्यद्वागधेयतः ॥ ९ ॥ मध्येराज्ञां  
महाबाहुंसदायुद्धाभिर्नादिनं ॥ सर्वास्त्रपारंगंद्रोणंकथंमृत्युरुपेयिवान् ॥ १० ॥ समनुप्राप्तकृच्छ्रोहंमोहंपरममागतः ॥ भीष्मद्रोणौहतौश्रुत्वानाहंजीवितुमुत्स  
हे ॥ ११ ॥ यन्मांक्षत्ताब्रवीत्तातप्रपश्यन्पुत्रगृद्धिनं ॥ दुर्योधनेनतत्सर्वप्राप्तंसूतमयासह ॥ १२ ॥ नृशंसंतुपरंतुस्यात्यक्कादुर्योधनंयदि ॥ पुत्रशेषंचिकीर्षयंकृ  
त्स्नंनमरणंव्रजेत् ॥ १३ ॥ योहिधर्मपरित्यज्यभवत्यर्थपरोनरः ॥ सोस्माच्चहीयतेलोकाक्षुद्रभावंचगच्छति ॥ १४ ॥

॥ १ ॥ संप्रयुक्तःसंबद्धः भवतिउत्पद्यते तस्मिन्दिष्टएव ॥ २ ॥ अत्रोदाहरणमाह दीर्घमिति ॥ ३ ॥ ममपुत्रस्ययद्भवद्वाज्यंअर्थात्तदिष्टैवसंयोगादित्यनुषंगः ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥